भारतीय दर्शन परम्परा में मैथिलों का अवदान

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा
के मानविकी संकाय अन्तर्गत संस्कृत विभाग में पी–एच0–डी0
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा
2024

पर्यवेक्षक

डा0 कृष्णकान्त झा
एशोसियेट प्रोफेसर
सह अध्यक्ष, संस्कृत–विभाग
एम0एल0एस0 कॉलेज,
सरिसव पाही जिला–मधुबनी
ल0ना0मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा बिहार

गवेषिका

रीतु कुमारी
विभागीय क्रमांक–03
पैट क्रमांक–E2218003
सत्र–2021–2022
Email Id-myritu769@gmail.com

शोध विषय : भारतीय दर्शन परम्परा में मैथिलों का अवदान

प्रस्तावना :-

"दृश्यते = ज्ञायते वस्तु याथात्म्यमनेन इति दर्शनम्",[1] इस परिभाषा के अनुसार सच्चिदानन्द स्वरूप अनन्तादि विशेषण विभूषित परब्रह्म के वास्तविक स्वरूप का दर्शन करनेवाली भारतीय मेधा का सर्वोत्कृष्ट अवदान का नाम भारतीय दर्शन है। परन्तु भारतीय दार्शनिकों के उद्‌गम और ऐतिहासिक क्रम के सन्दर्भ में निश्चयपूर्वक कुछ कहना बड़ा ही कठिन है। यहाँ के दार्शनिकों ने अपने आत्मपरिचय या कालनिर्धारण की अपेक्षा अपने दार्शनिक सिद्धान्तों के प्रतिपादन पर ही विशेष बल दिया है। अतः उनके दार्शनिक सिद्धान्तों को आधार बनाकर ही उनका परिचय प्राप्त किया जा सकता है। सामान्यतः भारतीय दर्शन के ऐतिहासिक विकास–क्रम को निम्नलिखित कालों में विभाजित कर सकते है।

प्रथम	:	**वैदिक काल से ई0पू0 5वीं शताब्दी तक**
द्वितीय	:	**ई0पू0 5वीं0 शताब्दी से 10वीं0 शताब्दी तक**
तृतीय	:	**10वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक**
चतुर्थ	:	**वर्तमान शताब्दी**

श्रीविष्णुपुराण के चतुर्थ अंश के द्वितीय अध्याय के अनुसार मनु के घ्राणेन्द्रिय से इक्ष्वाकु नामक पुत्र का जन्म हुआ।[2] इक्ष्वाकु के सौ पुत्रों में से विकुक्षि, निमि और दण्ड नामक तीन पुत्र प्रधान थे।[3] गुरू शाप के कारण जब निमि के शरीर का पतन हो गया, तदनन्तर अराजकता के भय से मुनिजनों के द्वारा उस पुत्रहीन राजा के शरीर को अरणि से मथा गया, जिससे एक कुमार

---

1 दृश्+ल्युट्। "करणाधिकरणयोश्च" पा0सू–3/3/117
इति करणे ल्युट : अनुबन्धलोपे, "युवोरनाकौ" पा0सू–7/1/1 इति अनादेशे दर्शनमिति।

2 क्षुतवतश्च मनोरिक्ष्वाकु : पुत्रो जज्ञे घ्राणतः। विष्णुपुराण 4.2.11

3 तस्य पुत्रशतप्रधाना विकुक्षिनिमिदण्डाख्यास्त्रय : पुत्रा बभूवु : । विष्णुपुराण 4.2.12

Ritu Kumari
04/04/2024

उत्पन्न हुआ, जो जन्म लेने के कारण 'जनक' कहलाया। इनके पिता विदेह थे, इसलिये यह 'वैदेह' तथा मन्थन से उत्पन्न होने के कारण मिथि नाम से प्रसिद्ध हुआ।[4] कालान्तर में मिथि के नाम पर ही तिरहुत क्षेत्र मिथिला के नाम से प्रसिद्ध हुआ। ऐसा ही वर्णन श्रीमदभागवत के नवम् स्कन्ध के त्रयोदश अध्याय के द्वादश एवं त्रयोदश श्लोक में भी प्राप्त होता है –

अराजकभयं नृणां, मन्यमाना महर्षयः।
देहं ममन्थु : स्म निमे :, कुमार : समजायत।।

जन्मना जनकः सोऽभूद, वैदेहस्तु विदेहजः।
मिथिलो मथनाज्जातो, मिथिला येन निर्मिता।।

वहीं मैथिलों के विषय में आचार्य शुकदेव जी मुक्तकण्ठ से यह भी कहते हैं–

एते वै मैथिला राजन्नात्मविद्याविशारदा :।
योगेश्वरप्रसादेन द्वन्द्वैर्मुक्ता गृहेष्वपि।।

श्रीमदभागवत (9.13.27)

अर्थात् मिथिलावासी आत्मविद्या में विशारद एवं गृहस्थ होने पर भी द्वन्द्वों से मुक्त होते हैं।

मिथिला का एक अपर नाम ''तीरभुक्ति'' भी था, जिसे अपभ्रंश में आज हम 'तिरहुत' कहते हैं।

4. अभूद्विदेहोऽस्य पितेति वैदेह, मथनान्मिथिरिति। विष्णुपुराण 4.5.23

Ritu Kumari
04/04/2024

मिथिला जनपद की लम्बाई 24 योजन अथवा 192 मील तथा चौड़ाई 16 योजना अथवा 127 मील थी और उसके उत्तर में पर्वतराज हिमवान का अरण्य प्रदेश, दक्षिण में हिमवत्प्रभवा पुण्यसलिला गङ्गा नदी, पूर्व में परमचञ्चला कोशी नदी की वेगवती धारा और पश्चिम में गण्डक नदी है। गण्डक को नारायणी एवं सदानीरा भी कहा जाता है जो हाजीपुर के निकट बिहार राज्य की राजधानी पटना (प्राचीन पाटलिपुत्र) के सामने गङ्गा से मिलती है–

गङ्गाहिमवतोर्मध्ये, नदीपञ्चदशान्तरे।
तैरभुक्तिरिति ख्यातो, देश : परमपावन :।।

बृहद्विष्णुपुराणीयं मिथिला महात्म्यम् (14.37)

कौशिकीन्तु समारभ्य, गण्डकीमधिगम्य वै।
योजनानि चतुर्विंशत्यायाम : परिकीर्तित :।।

बृहद्विष्णुपुराणीयं मिथिला महात्म्यम् (14.42)

गङ्गाप्रवाहमारभ्य यावद्धैमवतं नम्।
विस्तार : षोडशः प्रोक्तो देशस्य कुलनन्दन।।

बृहद्विष्णुपुराणीयं मिथिला महात्म्यम् (14.43)

मिथिला नाम नगरी, तत्रास्ते लोकविश्रुता।
पञ्चभि : कारणै : पुण्या , या विख्याता जगत्त्रये।।

बृहद्विष्णुपुराणीयं मिथिला महात्म्यम् (14.44)

शतपथ ब्राह्मण की 'बृहदारण्यकोपनिषद्' के वर्णनों से पता चलता है कि उपनिषद्काल में मिथिला की विदेह राज्य सभा अति सम्माननीय थी, जिसके प्रधान सभासद अध्यात्मविद्या तथा दर्शनशास्त्र विशारद वैशम्पायन शिष्य देवरथ पुत्र ऋषि याज्ञवल्क्य थे। ऋषि याज्ञवल्क्य शुक्ल यजुर्वेद संहिता के द्रष्टा एवं

Ritu Kumari
04/04/2024

वेदों की अनेक ऋचाओं के कर्त्ता हैं। बृहदारण्यकोपनिषद् के दूसरे, तीसरे एवं चौथे अध्यायों में ऋषि याज्ञवल्क्य के दार्शनिक सिद्धान्त उल्लेखनीय है। बृहदारण्यक उपनिषद् के दूसरे अध्याय में ऋषि याज्ञवल्क्य द्वारा अपनी ब्रह्मवादिनी पत्नी मैत्रेयी से तत्त्वज्ञान पर हुऐ संवादों का उल्लेख है, तीसरे अध्याय में विदेह राज जनक के दरबार में इनके द्वारा अनेकानेक तत्त्वज्ञानियों से हुए वाद–विवादों का परिचय प्राप्त होता है तथा चौथें अध्याय में स्वयं राजा जनक से तत्त्वज्ञान पर चर्चा की गई है। इन सारे संवादों से ऋषि याज्ञवल्क्य के व्यक्तित्त्व एवं दार्शनिक तत्त्वज्ञान का प्रमाण मिलता है।

प्राचीन काल में मिथिला में बसने वाले महर्षियों में गौतम ऋषि का भी नाम उल्लेखनीय हैं। महर्षि गौतम एक वैदिक ऋषि थे इन्होंने अनेक वैदिक मन्त्रों के दर्शन किये थे एवं ईश्वर की सिद्धि के लिए न्याय दर्शन का भी प्रणयन किये। महर्षि गौतम ने न्यायदर्शन का प्रवर्तन कर सम्पूर्ण संसार को तर्कविद्या का उपहार दिया हैं। महर्षि गौतम के पुत्र शतानन्द जनक के कुलपुरोहित थे, जिसका वृत्तान्त रामायण में उपलब्ध है। महर्षि गौतम का आश्रम दरभंगा जिला के कमतौल रेलवे स्टेशन के निकट स्थित है; यहीं पर गौतमकुण्ड भी अवस्थित है तथा राम के आविर्भाव के समय गौतमपत्नी अहिल्या का निवास भी यहीं माना जाता है।

आसीद् ब्रह्मपुरी नाम्ना, मिथिलायां विराजिता।
तस्यां लसति धर्मात्मा, गौतमो नाम तापस :।।
अहल्या नाम तत्पत्नी, पतिभक्ता प्रियंवदा।
सर्वलक्षणसम्पन्ना, सासीत्सर्वांगसुन्दरी ।।[5]

---

[5] मिथिला का इतिहास, पृ०सं०–22, संपादक डॉ० रामप्रकाश शर्मा, प्रकाशन – कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रकाश[redacted]र्ष–1979ई० प्रथम संस्करणम्

Ritu Kumari
04/04/2024

सर्वदर्शन पण्डित वाचस्पति मिश्र मिथिला के ही विभूति थे और इनका निवास स्थान मधुबनी जिले के अन्तर्गत ठाढी ग्राम था। दर्शन के इतिहास में वाचस्पति मिश्र का नितान्त महनीय स्थान है। उन्होंने जिस विषय पर अपनी आलौकिक लेखनी चलाई उसे अपनी प्रकाण्ड प्रतिभा तथा आदरणीय वैदुष्य से आलोकित बना दिया। इन्होंने ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका पर *'तत्त्वकौमुदी'* नामक ग्रन्थ की रचना की तथा योगसूत्र के व्यासभाष्य के ऊपर अपनी *'वैशारदी'* टीका लिखकर योग के तत्त्वों को सुबोध और सरल बनाया है। इनके द्वारा रचित *'न्यायतात्पर्यटीका'* न्याय के क्षेत्र में एक बहुमूल्य कृति हैं। मीमांसा के क्षेत्र में इनकी महत्त्वपूर्ण कृति *न्यायकणिका* (विधिविवेक की टीका) हैं। अद्वैताकाश के देदीप्यमान नक्षत्रों में भामतीकार पं0 वाचस्पति मिश्र का नाम अत्यन्त आदर के साथ लिया जाता है। *भामती* ब्रह्मसूत्र के शाङकर भाष्य की अदभुत व्याख्या है। इन्होंने सुरेश्वर की ब्रह्मसिद्धि पर ब्रह्मतत्त्वसमीक्षा की रचना की थी।

10वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् उदयनाचार्य मिथिला के समस्तीपुर जिले के रोसड़ा थाने में करियन नामक ग्राम के निवासी थे। उदयनाचार्य ने *न्यायकुसुमाञ्जलि, तात्पर्यशुद्धि, आत्मतत्त्वविवेक, लक्षणावली* आदि ग्रन्थों का प्रणयन किये थे। उदयनाचार्य ने किरणावली ग्रन्थ की रचना की थी। श्रीधर एवं उदयन ने ही 'अभाव' को सप्तम पदार्थ के रूप में प्रतिष्ठित किया था।

कुमारिल भट्ट मिथिला की विभूति थे। इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिए हेतु की कमी नहीं है। *'शङ्कर–दिग्विजय'* एक अति विश्वसनीय ग्रन्थ है। उसके प्रणेता हैं आनन्द गिरिजी। उन्होंने उस ग्रंथ में मण्डन मिश्र को कुमारिल भट्ट का भगिनीपति लिखा है। मण्डन मिश्र मिथिला के सहरसा जिले के महिषी (प्राचीन माहिष्मती) ग्राम के निवासी थे। अतः कुमारिल भट्ट को उसके निकट के किसी गाँव का निवासी मानना ही पड़ेगा। जन समुदाय का विश्वास

Ritu Kumari
04/04/2024

है कि कुमारिल भट्ट दरभङ्गा जिले के भट्टपुर ग्राम के रहने वाले थे। कुमारिल भट्ट मण्डन मिश्र के गुरु भी थे।

मीमांसा शास्त्र के महान पण्डित मण्डन मिश्र का निवास स्थान मिथिला स्थित सहरसा जिले के वर्तमान महिषी ग्राम था, जिसका प्राचीन नाम माहिष्मती माना जाता है।

नव्य–न्याय के प्रवर्त्तक महामनीषी पण्डित गंगेश उपाध्याय का जन्म स्थान मिथिला में मधुबनी जिले के मगँरौनी नामक ग्राम में 13वीं शताब्दी में हुआ। पदार्थ विवेचन की अपेक्षा प्रमाण विवेचन को गंगेश उपाध्याय ने महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। नव्य–न्याय के ग्रन्थों में गंगेश उपाध्याय रचित ग्रन्थ *'तत्त्वचिन्तामणि'* प्रमुख है।

वर्द्धमान उपाध्याय गंगेश उपाध्याय के पुत्र थे। अतः वे भी मँगरौनी ग्राम के निवासी थे। उनके द्वारा प्रणीत ग्रन्थ निम्नांकित है। –

(1) तत्त्वचिन्तामणिप्रकाश (2) न्यायनिबन्धप्रकाश (3) न्यायपरिशिष्टप्रकाश (4) किरणावलिप्रकाश (5) न्यायकुसुमाञ्जलिप्रकाश (6) न्यायलीलावतीप्रकाश तथा (7) खण्डनखाद्यप्रकाश।

'खण्डनखाद्यप्रकश' वेदान्त विषयक ग्रन्थ है। यह श्रीहर्ष के खण्डनखण्डखाद्य पर भाष्य–ग्रन्थ है। विजयनगर के विद्यारण्य माधवाचार्य ने अपने ग्रन्थ *'सर्वदर्शनसंग्रह'* में पं0 वर्द्धमान उपाध्याय की चर्चा की है। इससे उनकी महत्ता पर प्रकाश पड़ता है।

पक्षधर मिश्र वर्तमान मधुबनी जिला के पण्डौल अंचल के जमसम नामक ग्राम के निवासी थे। उनका जन्म एक प्रतिष्ठित विशिष्ट श्रोत्रिय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ये सोदरपुरिये ओइनवार मूलक शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मण थे। मिथिला के ओइनवार–वंश के राजा भैरवसिंह देव की राजसभा के पण्डितो में से वे एक थे। वे मिथिला के प्रसिद्ध महाकवि विद्यापति ठाकुर के समकालीन थे। उनका समय 15वीं शताब्दी है। पक्षधर मिश्र उनका नाम नहीं था; उनका

Ritu Kumari
04/04/2024

प्रकृत नाम जयदेव था। किसी भी विषय पर लगातार एक पक्ष तक तर्क–पूर्ण वाद–विवाद करने की शक्ति उनमें थी, और जिस पक्ष को वे ग्रहण करते थे, उसको अपनी बुद्धिमत्ता एवं तर्क–शक्ति से प्रमाणित करके ही दम लेते थे। इसी कारण उनकी उपाधि पक्षधर हुई, जो उनके नाम का पीछे चलकर पर्याय बन गया। उनका यथार्थ नाम जयदेव की जगह पक्षधर ही उनका वस्तुतः नाम समझा जाने लगा। उन्होंने 'विष्णु–पुराण' की प्रतिलिपि तालपत्रों पर उतारी थी। पक्षधर मिश्र द्वारा रचित मुख्य ग्रन्थों के नाम हैं – (1) *'तत्त्वचिन्तामणिआलोक'* (2) *'द्रव्य–पदार्थ'* तथा (3) *'लीलावतीविवेक'*। *'तत्त्वचिन्तामणिआलोक'* का संक्षिप्त नाम *'आलोक'* है।

वसुदेव मिश्र पक्षधर मिश्र के भातृ–पुत्र एवं शिष्य थे। उन्होंने गंगेश उपाध्याय के *'तत्त्वचिन्तामणि'* पर *'तत्त्वचिन्तामणि टीका'* नामक भाष्य प्रस्तुत किया था।

रूचिदत्त मिश्र भी पक्षधर मिश्र के शिष्यों में से एक थे। उनकी मुख्य कृतियों में एवं *'न्यायकुसुमाञ्जलि प्रकाश मकरन्द'* के नाम उल्लेखनीय है।

शङ्कर मिश्र भी वर्तमान मधुबनी जिले के पाहीटोल सरिसब ग्राम के निवासी थे। उनके पिता का नाम अयाची मिश्र था। वे बचपन से ही कुशाग्र–बुद्धि थे। उनकी प्रतिभा अद्वितीय थी। उनके द्वारा प्रणीत मुख्य ज्ञात ग्रन्थ वैशेषिक *सूत्रोपस्कारभाष्य* है यह गन्थ वैशेषिक सूत्रों के अभिप्रायबोध का प्रमुख आधार समझा जाता है।

भगीरथ ठाकुर का दूसरा नाम मेघ था। वे खण्डवाला राजवंश के संस्थापक महेश ठाकुर के भ्राता थे। इनका जन्म दरभंगा जिले के भउर ग्राम में हुआ था। इनके द्वारा रचित मुख्य ग्रन्थ निम्न हैं –

(1) कुसुमाञ्जलि प्रकाश प्रकाशित', (2) किरणावलिप्रकाश प्रकाशिका, तथा

(3) 'लीलावतीप्रकाशव्याख्या'।

Ritu Kumari

04/04/2024

महेश ठाकुर का जन्म दरभंगा जिला नगर से 16 मील उत्तर–पूर्व दिशास्थित भौर ग्राम के खण्डवाला ब्राह्मण–वंश में हुआ था। ये मिथिला में खण्डवाला राजकुल के संस्थापक तथा दरभंगा के महाराजाओं के पूर्वज थे। पक्षधर मिश्र प्रणीत *'तत्त्वचिन्तामणिआलोक'* पर इन्होंने *'तत्त्वदर्पण'* नामक भाष्य प्रस्तुत किया था। इसका स्थान प्रामाणिक ग्रन्थों में है, इस ग्रंथ का प्रमाण सर्वमान्य है।

15वीं एवं 16वीं शताब्दी में मिथिला की महिलाओं ने भी दर्शन ज्ञान के क्षेत्र में अनोखा कार्य किया। अपने हाथों में लेखनी लेकर उन्होंने निगूढ़ दर्शन पर सुन्दर ग्रन्थों की रचना की राजा चन्द्रसिंह की रानी लछिमा देवी ने न्याय–वैशेषिक पर *'पदार्थ–चन्द्र'* नामक भाष्य का प्रणयन किया। उस युग की अन्य विदुषी नारियों में राजा शिवसिंहदेव की स्त्री रानी लखिमा देवी, राजा पद्म सिंह की भार्या रानी विश्वास देवी, तथा महाकवि विद्यापति ठाकुर की पुत्र–वधू चन्द्रकला देवी थी।

I. शोध विषय का महत्त्व :–

मिथिला में ऐसे अनेक विद्वानों का उद्भव हुआ, जिन्होंने दर्शन के अति गहन एवं गम्भीर विषय पर अनेक ग्रन्थ लिखें। प्रस्तावित शोध के द्वारा मिथिला की अतिसमृद्ध दार्शनिक परम्परा का मूल्याङ्कन करना है, जिससे भारतीय दर्शन में मिथिला के योगदान को रेखाङ्कित किया जा सकें। इस विषय पर युक्तियुक्त अनुसन्धान के फलस्वरूप बौद्धिक समाज इस तथ्य से अवगत होंगे कि किस प्रकार मैथिल दार्शनिकों ने बौद्ध धर्म तथा अन्य धर्मों के प्रभाव से आस्तिक दर्शन के स्वरूप को बचाये रखा तथा अपने विचारों से समाज को खण्डित होने से बचाया।

II. पूर्वकृत एतद्विषयक शोधकार्य :–

मिथिला के विद्वानों से सम्बन्धित अनेक शोधकार्य हुए हैं – प्रभाकर ठाकुर; ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, इतिहास विभाग, 2014 कृत

Ritu Kumari
04/04/2024

''मिथिला के दार्शनिक परम्पराओं का ऐतिहासिक विश्लेषण 14वीं शताब्दी तक'' विषयक शोधकार्य में 14वीं शताब्दी तक के ही दार्शनिकों का उल्लेख है। परन्तु प्रस्तुत शोधकार्य में वर्तमान समय तक के दार्शनिकों को उल्लेखित किया गया है। इसके अतिरिक्त *संस्कृत वाङ्मय में मिथिला,* (कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा), *उपनिषत्सु मिथिलायाः वैशिष्ट्यम्* (कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा) *मिथिलायाः साहित्य शास्त्रीय परम्परा तथा प्रवासी मैथिल पण्डितो का संस्कृत में योगदान* विषयक शोधकार्य प्राप्त हुए है।

उपर्युक्त शोधकार्यों से यह ज्ञात होता है कि यद्यपि मिथिला के संस्कृत वाङ्मय से सम्बन्धित अनेक शोधकार्य किये गये है परन्तु मेरे द्वारा गृहीत विषय से सम्बन्धित कोई शोधकार्य दृष्टिगोचर नहीं हुआ है। अतः यह शोधकार्य सभी शोधकार्यों से भिन्न एवं मौलिक होगा।

III. शोधकार्य के स्रोत :–

इस शोधकार्य के स्रोत ''समग्र भारतीय दर्शन,'' ब्राह्मणग्रन्थ, उपनिषद्, पुराण, मिथिला का इतिहास, बृहद्विष्णुपुराणीयं मिथिला माहात्म्यम्, एवं विभिन्न दार्शनिक ग्रन्थ एवं संस्कृत टिकाएँ आदि हैं।

IV. प्रविधि एवं आवश्यक उपकरणों का विवरण :–

इस शोधकार्य को मूलरूप से भारतीय दर्शन के समग्र सम्प्रदाय एवं सहायक रूप से उपनिषद्, मिथिला का इतिहास आदि शास्त्रों का समावेश करते हुए यथासम्भव लैपटॉप, इन्टरनेट इत्यादि आधुनिकतम वैज्ञानिक उपकरणों तथा विभिन्न पुस्तकालयों तथा पत्र–पत्रिकाओं के सहयोग से सम्पन्न किया जायेगा।

प्रस्तुत शोधकार्य विश्लेषणात्मक एवं परिचयात्मक प्रविधि से किया जायेगा, जिसमें मुख्य–रूप से भारतीय दर्शन परम्परा में मैथिलों के योगदान को यथासम्भव समावेशित करने की चेष्टा की जाएगी।

Ritu Kumari
04/04/2024

V. शोध की परिकल्पना :–

शोध कार्य का सम्पादन करना एक दुरूह कार्य है। किसी भी विषय पर अनुसन्धान के पूर्व उसके सम्बन्ध में एक तार्किक चिन्तन की आधारभित्ति तैयार करनी पड़ती है, वही परिकल्पना कहलाती है। प्रस्तुत शोध कार्य ''मैथिल दार्शनिकों'' को केन्द्र बिन्दु मानकर चारों ओर परिभ्रमण करता हुआ भारतीय दर्शन की आधारशिला का अवलम्बन कर अपने शोध प्रारूप के अनुसार पल्लवित किया जाएगा, जिससे मैथिल दार्शनिक सम्बन्धी सम्पूर्ण शास्त्रीय एवं लौकिक अवधारणाओं को एक प्रामाणिक आधार मिल सकेगा।

VI. शोध के प्रस्तावित अध्याय :–

लेखन की सुगमता के लिए इस शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है :–

भूमिका :–

प्रथम अध्याय	:–	दर्शन-शास्त्र का परिचय एवं भेद
द्वितीय अध्याय	:–	सांख्य एवं योग-दर्शन में मैथिलों का अवदान
तृतीय अध्याय	:–	न्याय एवं वैशेषिक-दर्शन में मैथिलों का अवदान
चतुर्थ अध्याय	:–	मीमांसा एवं वेदान्त-दर्शन में मैथिलों का अवदान
पञ्चम अध्याय	:–	नास्तिक-दर्शन में मैथिलों का अवदान
		उपसंहार
		सन्दर्भ ग्रन्थ एवं पत्रिकाओं की सूची।

Ritu Kumari
04/04/2024

VII. संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

क्रम0 सं0	पुस्तक का नाम	लेखक / सम्पादक	प्रकाशन	प्रकाशन वर्ष	संस्करण
1	अद्वैतसिद्धिसिद्धान्तसार :	पं0 लक्ष्मण शास्त्री द्रविड़	चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी	वि0 स0 2057	द्वितीय संस्करण
2	उदयनाचार्य :	काशीनाथ मिश्र	साहित्य अकादमी	1996 ई0	प्रथम संस्करण
3	किरणावली	श्री गौरीनाथ शास्त्री	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी	1980 ई0	प्रथम संस्करण
4	किरणावलीप्रकाश	बदरीनाथ शास्त्री	सरस्वती भवन	1936 ई0	द्वितीय
5	तत्त्वचिन्तामणि	डॉ0 भागीरथप्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री'	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय	1976 ई0	प्रथम संस्करण
6	तर्कभाषा	श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी	भारतीय विद्या प्रकाशन	1997 ई0	प्रथम संस्करण
7	न्यायकुसुमाञ्जलि	डॉ0 श्रीनारायण मिश्र	भारतीय विद्या प्रकाशन	1997 ई0	प्रथम संस्करण
8	न्यायमञ्जरी	सिद्धेश्वर भट्ट शशिप्रभा कुमार	विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली	2001 ई0	प्रथम संस्करण
9	न्यायलीलावती	पं0 हरिहर शास्त्री	चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी	1991 ई0	द्वितीय संस्करण

Ritu Kumari
04/04/2024

10	न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका	पं0 राजेश्वरशास्त्री द्रविड़	चौखम्भा संस्कृत संस्थान वाराणसी	1990 ई0	पुनर्मुद्रन
11	न्यायसिद्धान्तमुक्तावली	डॉ0 गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर आचार्य लोकमणि दहाल	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी	2011 ई0	संस्करण संस्करण
12	पातञ्जलयोगदर्शनम्	डॉ0 सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन	2012 ई0	प्रथम संस्करण
13	बृहदारण्यकोपनिषद् एक दार्शनिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन	डॉ0 मनुदेव बन्धु	आस्था प्रकाशन	2014 ई0	प्रथम संस्करण
14	बृहद्विष्णुपुराणीयं मिथिला–माहात्म्यम्	पं0 धर्मनाथ झा	कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा	2013 ई0	द्वितीय संस्करण
15	भारतीय दर्शन की चिन्तनधारा	राममूर्ति शर्मा	मणिद्वीप बी0एस–5 शालीमारबाग दिल्ली	2001 ई0	द्वितीय संस्करण
16	भरतीय दर्शन की रूपरेखा	प्रो0 हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा	मोतीलाल बनारसीदास	1963 ई0	प्रथम संस्करण
17	मिथिला का इतिहास	डॉ0 रामप्रकाश शर्मा	कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा	1979 ई0	प्रथम संस्करण
18	मीमांसा दर्शनम्	डॉ0 उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि'	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन	1981 ई0	द्वितीय संस्करण
19	मीमांसा दर्शन विमर्श	डॉ0 वाचस्पति	भारतीय विद्या	1976	प्रथम

Ritu Kumari
04/04/2024

		उपाध्याय	प्रकाशन		संस्करण
20	वेदान्तसार :	श्री रामशरणत्रिपाठी शास्त्री	चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी	2012 ई0	प्रथम संस्करण
21	शतपथब्राह्मण	स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती	स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, मेरठ	1995 ई0	प्रथम आवृत्ति
22	सांख्यकारिका	श्री गुरुप्रसादशास्त्री आचार्य श्रीसीतारामशास्त्री	चौखम्बा विद्याभारती प्रकाशन	2017 ई0	संस्करण
23	सांख्यतत्त्वकौमुदी	रामशङ्कर भट्टाचार्य	मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी	1967 ई0	प्रथम संस्करण
24	श्रीमद्भागवतपुराणम्	श्रीधरस्वामी	मोतीलाल बनारसीदास	1983 ई0	प्रथम संस्करण
25	श्रीविष्णुपुराणम्	आचार्य शिवप्रसाद द्विवेदी	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन	2022 ई0	संस्करण

पर्यवेक्षक
04/04/24
डा0 कृष्णकान्त झा
एशोसियेट प्रोफेसर
सह अध्यक्ष, संस्कृत–विभाग
एम0एल0एस0 कॉलेज,
सरिसब पाही जिला–मधुबनी
ल0न0मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा बिहार

गवेषिका
Ritu Kumari
रीतु कुमारी 04/04/2024
विभागीय क्रमांक–03
पैट क्रमांक–E2218003
सत्र–2021–2022
Email Id-myritu769@gmail.com

***